गीत–गंगा

(मैथिली गीत संग्रह)

जगदीश चन□ ठाकुर 'अनिल'

शेखर प्रकाशन

पटना–24

गीत–गंगा

गीतकार- जगदीश चन□ ठाकुर 'अनिल'

प्रकाशक/मु□क	:	**शेखर प्रकाशन** 2A/39, इन्द्रपुरी, पटना–24

प्रथम संस्करण	:	2013
शब्द संयोजन एवं आवरण	:	राजाशेखर
मूल्य	:	120/ टाका

प्राप्ति स्थान

शेखर प्रकाशन
पेफुलर फमा□क पाछा□
न्यू मार्केट, पटना–800001
मो.– 09334102305

'संस□ति' रोड, नं.–1 ए,
वाल्मी लग, वृन्दावन
कालोनी, फुलवारी शरीफ
पटना–801505
मो.–9570635372

गीत-□म



आत्म-गीत

(1)

एक दिन बीतल, कय दिन बीतल
मासहु बीतल सालहु बीतल
एक युग बीतल कय युग बीतल
कयटा वसन्त भादो बनि क'
अछि समय-सिन्धुमे समा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल

(2)

सपना पाहुन बनि क' आयल
तन्नुक-सन निन्नक आ□नमे
ओ फूल जे माला बनि ने सकल
छिड़िआएल स्मृति केर कानममे
से टीस □दयमे अछि एखनहु
किछु तप्पत-सन किछु सेरा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(3)

जीवनकेर आंगनमे वसंत
आयल कहियो ह□सिते - ह□सिते
किछु कोंढ़ी छल से फूल बनल
झड़ि गेल मुदा छुबिते - छुबिते
गुन-धुन करइत मोनक भमरा
का□टेक दोगमे घेरा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(4)

बाबा छलाह खिस्सा कहइत
सुनि-सुनि क' छल अजगुत लगइत
इ झूठ छलै कि सत्ये छल
रहि गेल मोन गुन-धुन करइत
ओइ बाल-कन्हैया केर हाथें
छल नाग कोना क' नथा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(5)

मोने अछि एखनहु□ ओ बिहाड़ि
मोने अछि ओ फूही, पाथर
मोने अछि ओ रौदी-दाही
मोने अछि एखनहु□ भनसा-घर
चुल्हा लग मायक चुप्पी पर
कए बेर आ□खि छल नोरा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(6)

अ□नामे पमरिया नचइत छल
सभ कबुला-पाती करइत छल
ओ भोज-भात ओ भार-दौड़
पाहुन बरियाती चलइत छल
मूड़न-उपनयन-वियाहेमे
छल सभक चेतना खिया गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(7)

मोटका मोटका पोथी पढ़लौं
पोथी केर सभ पन्ना रटलौं
छल प्रश्न कतेको सोझा□मे
नहि तकर निदान कतहु देखलौं
हम पौलहु□ एक दिन अपनाकें
सय-सय बिर्रोमे घेरा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(8)

हमरा सोझा□मे छल पर्वत
हमरा सोझा□मे छल इनार
हम कत' जाउ हम कोम्हर जाउ
चहु□दिस पसरल टा छल अन्हार
छल अनचिन्हार रस्ता सभटा
छल पएर आगि पर धरा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(9)

छल सुप्त हिमालय बरकि उठल
अन्तरमे धधरा धधकि उठल
सय-सय कोसी, सय-सय कमला
कत घाव मोनमे टहकि उठल
हम देखलहु□ दूनू हाथ अपन
मुट्ठी छल अपनहि कसा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(10)

हम थाकि गेलहु□ चलइत-चलइत
हम कानि गेलहु□ ह□सइत-ह□सइत
अनवरत अभावक दुर्दिन स□
हम हारि गेलहु□ लड़इत-लड़इत
नहि जानि कखन के सूतलमे
कविता केर अमृत चटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(11)

चलिते-चलिते भेटलाह रमण
आ भेटि गेला श्री सोमदेव
कोइलख विद्यापति पावनिमे
भेटल आशीष मधुप, किरणक
सस्वर दू रचना केर पाठ
छल पीठ हमर थपथपा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(12)

कविता अयली जहिया संगमे
भ' गेल पैघ परिवार हमर
यात्री, हरिमोहन, जीवकान्त
शेखर, रवीन□, मणिप□, अमर
बाबू, कक्का आ भैया-सन
छल नाम कतेको जोड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(13)

कविता संग हम जीबय लगलहु□
बूलय लगलहु□, झूलय लगलहु□
जीवनके □ उत्सव मानि सतत
नाचय लगलहु□, झूमय लगलहु□
कवितास□ प्रेमक बात हमर
छल गाम–गाम गनगना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(14)

'पारो'कें पढ़ि क' कना गेल
'खट्टर कक्का' स□ ह□सा गेल
'बाबा डंडोत बच्चा जय सियाराम'
चिंतित मनकें गुदगुदा गेल
'वस्तु' केर पिहानी 'नानी' पढ़ि
नहि जानि कते की सोचा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(15)

लिखबा आ पढ़बा केर नशा
सूनब आ सुनयबा केर नशा
शब्दक सोना, हीरा, मोती
देखब आ देखयबा केर नशा
सदिखन आनन्दित रहबा ले'
जीवनक अर्थ छल बुझा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(16)

हम गाम–गाम घूमय लगलहु□
सभठा□ सभ किछु देखय लगलहु□
'नवतुरिया' के □ ताकय लगलहु□
'दुखमोचन' के □ चीन्हय लगलहु□
'मरनी', 'बिलटू' केर देखि बगय
छल अप्पन सभ दुख पड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(17)

कवितामे देखलहु□ हिमगिरिके □
कवितामे देखलहु□ गंगा के □
कवितामे देखलहु□ अपनहि सन
नहि जानि कते भिखमंगा के □
छल नाम मूल आ गोत्र सभक
कवितामे सभटा बुझा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(18)

हम आ□खि खोलि चलइत रहलहु□
घुमइत रहलहु□, देखइत रहलहु□
पढ़इत रहलहु□, सुनइत रहलहु□
गुनइत रहलहु□, धुनइत रहलहु□
अहिनामे □मशः हमरहुस□
'तोरा अ□नामे' लिखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(19)

शशिकान्त-सुधाकान्तक जोड़ी
हमरा शब्दहुके □ पा□खि देलनि
उड़ि गेल शब्द सभ गाम-गाम
पटना, दिल्ली आ कोलकाता
गुरुजन, प्रियजनक प्रशंसास□
छल हमर आत्मा जुड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(20)

सत नारायणक कथा सुनलहु□
सपता-विपताक व्यथा सुनलहु□
चौरचनमे खीर आ पूड़ी त□
छठिमे ठकुआ-भुसबा खयलहु□
दुर्गापूजामे बलिप्रदान
छल प्रश्न मोनमे उठा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(21)

चहु□दिस धधरा धधकैत छलै
सभहक छाती धड़कैत छलै
सभ चिड़ै खेतमे छल कनइत
सभहक खोंता उजड़ैत छलै
भ' जाउ तृप्त हे अग्निदेव
कनितो-कनितो छल बजा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(22)

बच्ची केर अएबास□ पहिनहि
जरि गेल घ'र जे फूसक छल
छल हमर चाकरी केर चिन्ता
तै पर कर्जा भरि टोलक छल
परिवर्तन केर सुख छलनि बुझू
भेटबास□ पहिनहि छिना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(23)

छल अति संघर्षक दिन घरमे
ओ खटै छली, चुप रहै छली
कहबा ले' जे किछु रहै छलनि
नोरेस□ सभटा कहै छली
खगताक बाढ़िमे छलनि अपन
गहनो-गुड़िया सभ दहा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(24)

घुमि गाम-गाम आ शहर-शहर
किछु माँगि-चाँगि क' जे अनलहु□
फाटल अंगा, फाटल जेबी
की कत' खसल से नहि बुझलहु□
आगा□ तकलहु□, पाछा□ तकलहु□
छल जा□त पएरमे बन्हा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(25)

अपनहि हाथें हम पत्र लीखि
अपनहिकें कयलहु□ सम्बोधन
अपनहि अर्जुन, अपनहि केशव
अपनहि बनि गेलहु□ दुर्योधन
अपनहि अन्तरमे महाभारत
अपनहि लोभें छल ठना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(26)

संघर्ष सत्य, थिक □ान्ति सत्य
सत्ये होइ छथि शिव आ सुन्दर
जे भेटि गेल से अछि सुन्दर
जे नहि भेटल से अति सुन्दर
सुन्दरतम तं थिक ओ घृत जे
अछि हवन-अग्निमे ढ़रा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(27)

हमरहि खातिर उनह□ारिमे
छल बैंकक राष्टि□यकरण भेल
भेल तपस्या फलीभूत
आ लागल जे नव जनम भेल
सभ रातिक होइए भोर अपन
अस्ति□व पाठ ई पढ़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(28)

एक दिस चाकरीक सुख-दुख छल
दोसर दिस साहित्यक धारा
तेसर दिस छूटल गाम-घर
छल उड़ल-उड़ल मन बेचारा
सपनामे छल हरियर धरती
आ फूल कते नव फुला गेल
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(29)

ओ मूल गोत्र आ गाम हमर
बाबाक धएल ओ नाम हमर
ओइ माइक शीतल छाहरि केर
आठो पल आठो याम हमर
कर्तव्यक पावन धारामे
□मशः सभ किछु छल विला गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(30)

पढ़लहु□ बच्चन आ दिनकरके □
नजरूल, विमल आ शंकर के □
आशापूर्णा, तसलीमा आ
गुरुदेव रवीन्द्रक आखरके □
नागार्जुन आओर निराला केर
खुट्टा छल मनमे गड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(31)

मिथिलाकें देखल मिथिलामे
देखल मिथिला सीवानोमे
पावनि–तिहार आ भोज–भात
भेटल समता परिधानोमे
छल एतहु दशानन केर लंका
रहिते–रहिते से बुझा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(32)

हिमगिरि समान किछु पुरुष छला
किछु भेटला गंगाजल समान
दुविधामे जखन–जखन पड़लहु□
हुनकहि चरित्रके □ कएल □यान
हुनकहि सिनेह केर छाहरिमे
मोनक सभ दुविधा मेटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(33)

आतंकक छाया छल पसरल
चहुंदिस अन्हार टा छल लतरल
उत्पात मचौने छल दानव
पीड़ा केर पर्वत छल अकड़ल
सरस्वती कुहरैत छली
हाथक वीणा छल छिना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(34)

अपहरण जतय उद्योग बनल
चंदाक वसूली रोग बनल
मारि–पीट, दंगा फसाद
छल लोकक खातिर भोग बनल
छल जहा□ जत' जे चिड़ै कतहु
आकाश छोड़ि क' पड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल

(35)

एक बिपटा, कते मदारी छल
सभहक सभस□ भैयारी छल
गाड़ी छल ऊपरमे चितंग
नीचा□ कुहरैत सबारी छल
हम थहाथही देखइत रहलहु□
छल कण्ठ कतेको मोका गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(36)

हे मित्र ! बंधु ! परिवार हमर !
हे आ□न आ चिनुआर हमर
जीबाकेर बजबा केर देखू
क्यो छीन लेलक अधिकार हमर
सोझामे माइक छाती पर
पाथर छल क्यो खसा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(37)

मा मिथिले, क्षमा करू हमरा
संकल्प अपन हम बिसरि गेलहु
हमरहु मुट्ठीमे छल अकाश
नहि जानि कत' हम पिछड़ि गेलहु
हमरहि चुप्पी केर कारण क्यो
अछि आखि अहाकें देखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(38)

की होयत ई जीवन ल'क'
की होयत तन-मन-धन ल'क'
की हएत जोगाक' आखि अपन
आ की अरण्य-न्दन ल'क'
कहइत अछि हमरा पंचबटी
मैथिलीक काया सुखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(39)

बिजली कखनहु क' अबै छली
किछु हसै छली किछु कनै छली
सभ बाट अहिल्या-सन शापित
नित बाट रामकेर तकै छली
निशिचरक उपद्रवस सभठा
छल यज्ञस्थल सभ घिना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(40)

हम थहाथही करइत रहलहु
अन्हड़-बिहाड़ि भोगइत रहलहु
कुकुर, हाथी आ गहुमनस
डरइत रहलहु, भगइत रहलहु
बतहा हाथी केर तरबातर
चुट्टी अनगिनती पिचा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(41)

हम देखलहु सभहक सोझामे
बकरीमे खुट्टा बान्हल अछि
सौंसे आकाशक बदलामे
कागत एक टुकड़ी तानल अछि
निर्वासित रहबाकेर दुख छल
मैथिलीक भाग्यमे लिखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(42)

देखलहु हम नवगछुलीके
देखलहु हम पुरना गाछीके
देखलहु हम गाछक धोधरिके
देखलहु हम गाछक बाझीके
छल हहरि गेल सभ गाछ मुदा
लाी-फाी सभ मोटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(43)

मनकें जे आलोकित केलक
से छल इजोत 'मिथिला मिहिर'क
'मिथिला दर्शन' आ 'माटि पानि'
'भारती' आ विद्यापति-पर्वक
'जय-जय भैरवि....' केर शंखनाद
चेतना-भूमिमे समा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(44)

यात्री, हरिमोहन जगा गेला
नित न'व पराती सुना गेला
आ□न-आ□न आ घर-घरमे
मैथिलीक पूजा सिखा गेला
'जय मैथिली' कहइत-कहइत
छल आ□खि हुनक डबडबा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(45)

हम गाम-शहर घुमइत रहलहु□
भारतक भूमि चुमइत रहलहु□
सभ जलकें गंगाजल समान
देखइत रहलहु□, छुबइत रहलहु□
छ□ीसगढ़क ओइ धरती पर
मिथिला केर धूआ देखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(46)

बस नाव-नदी संयोग कहू
पूर्वक किछु कर्मक भोग कहू
पाप-पुण्य केर योग कहू
अथवा नुकाइ ले' दोग कहू
सतपुड़ाक ओ हरियर जंगल
हमरहु अदिष्टमे लिखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(47)

रामक वनगमन जरूरी छल
राजाकेर ओ मजबूरी छल
सीताक हरणकेर पाछा□ त
रावणकेर दस टा मूड़ी छल
केकइक माथ पर इ कलंक
मन्थराक हाथें लिखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(48)

छल धोन्हि बहुत लागल ओ□ाहु
छल लोक बहुत बा□टल ओ□ाहु
देखलहु□ स□भवा□ जंगलमे
छल लोक बहुत जागल ओ□ाहु
नवकलश बहुत देखलहु□ लेकिन
छल गाछ कतेको सुखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(49)

माएस□ भेटल जे शीतलता
ओ निर्मलता आ भावुकता
पाथेय बनल से हमरा ले'
ओ लोचकता आ व्यापकता
कयटा पिच्छर छल बाट जतय
खसबास□ हमरा बचा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(50)

संततिक बिछोहक दारुण दुख
भरिसक जननी नहि सहि सकली
चिन्तास□ जर्जर कायामे
नहि सालो भरि ओ रहि सकली
नहि जानि कोन नव दुनियामे
प्राणक पंछी उड़ि पड़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(51)

बाबूकें रहै छलनि हमरा
बुधियार बनयबा केर चिन्ता
ओ देखथि लौकिक ि□या-कर्म
आ काज पड़ल सोझा□ सभटा
पोथीस□ हम्मर प्रेम देखि
ओ छला बहुत किछु डेरा गेल
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(52)

से पिता पुत्रस□ हारि गेला
आ जीत गेल पोथी-पतरा
की गाम-घर की ि□या-कर्म
ओ बिसरि गेल चिन्ता सभटा
की जन्मभूमि, की सर-कुटुम्ब
सभ दुनियादारी बिला गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(53)

हमरहि सोझा□मे एक राति
बाबूजी अन्तिम सा□स लेलनि
तजि जीर्ण-शीर्ण एहि कायाके □
नव काया ले' प्रस्थान केलनि
चलितो-चलितो एहि दुनियास□
ओ छला बहुत किछु सिखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(54)

घुरलहु□ कए मासक बाद गाम
उजड़ल उपटल बिलटल देखलहु□
जै घरके □ बाबू बना गेला
ओइ घरके □ खसल-पड़ल देखलहु□
सभटा लताम, सभटा नेबो
सभटा गुलाब छल सुखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(55)

छल पथरायल सम्बन्ध शेष
किछु वैचारिक अनुबन्ध शेष
मनके आनन्दित करबा ले'
एखनहु धरि छल किछु गन्ध शेष
माइक हाथक पाड़ल कोठी
माइक सभटा दुख सुना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(56)

हम देखलहु उल्कापात कते
हम सहलहु झंझावात कते
परिजन-प्रियजनस बिछुड़न केर
संताप कते, आघात कते
सुख-दुख केर नश्वरताक पाठ
अस्ति व गुरू बनि पढ़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(57)

हमरहु जीवनकेर उत्सव मे
छल श्रीरामक अवतरण भेल
हमरहु अन्तर केर सीता केर
छल जंगलमे अपहरण भेल
आ हमरहु हाथें रावण केर
दसटा मूड़ी छल कटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(58)

सोचै छी पिता-पितामह सभ
हमरा संग एखनहु छथि जिबइत
हम देखि रहल छी अपनामे
सभकें चलइत, ह सइत-गबइत
आइ काल्हि परसू सभटा
अपनहि अन्तरमे समा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(59)

जीवनके पढ़लहु बेर-बेर
जीवनके गुनलहु बेर-बेर
जीवनके देखलहु बेर-बेर
जीवनके भोगलहु बेर-बेर
स्वर्ग नर्क जिबितहिं सभटा
अपनहि जीवनमे देखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(60)

नहि बूझी जीवन केर मतलब
ओहिना जीने चल जाइत छी
नहि जानि पियास हटत कहिया
ओहिना पीने चल जाइत छी
सभ विष शिवशंकर के समान
जे जखन जत अछि देखा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(61)

हम जाहि सुखक कामना करी
से होइछ दुखमे परिवर्तित
मुश्किल अछि झंझावातहुमे
राखब अपनाके □ आनन्दित
अपनहि अन्तरमे बैसल क्यो
गीताक पाठ अछि पढ़ा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(62)

अपनहि हाथें हम छी लिखइत
सौभाग्य अपन, दुर्भाग्य अपन
अपनहि हस्ताक्षर देखै छी
पाछा□ तकइत छी जखन-जखन
ह□, किछु हस्ताक्षर एहनो अछि
जे अछि लेभरल वा मेटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(63)

जे सुख भेटल, जे शान्ति भेटल
अ□ययन, मनन आ चिन्तनमे
दुख-सुख केर परिभाषा जानल
की सफल, सुफल की जीवनमे
एक दृष्टि न'व, एक सृष्टि न'व
अपनहु अन्तरमे समा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(64)

सपना छल जे छी देखि चुकल
सपना अछि जे छी देखि रहल
सपने संगी अछि बनल हमर
सपने स□ हम छी सीखि रहल
सपनेमे अहिना पड़ल-पड़ल
ह□सिते-ह□सिते अछि कना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(65)

जीवनक अर्थ त□ हर्ष भेल
दोसर मतलब संघर्ष भेल
हम ताकि रहल छी अपनामे
की बा□चल आ की व्यर्थ गेल
अछि वएह सुफल दुनियामे जे
अपनाके □ कहुना बचा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(66)

हम के छी ? कत□ स□ आयल छी ?
अछि एबा केर प्रयोजन की ?
सुख-दुखक च□मे घूमि रहल
अनवरत हमर ई जीवन की ?
हमरा अन्तरमे आइ कियो
अछि प्रश्न कैकटा उठा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(67)

ई देह अतिथि, ई प्राण अतिथि
सम्मान अतिथि, अपमान अतिथि
अछि लोभ, मोह आ माया केर
अज्ञान अतिथि, विज्ञान अतिथि
हम अहिना रहब स्थिर तहियो
जहिया देखब सभ बिला गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(68)

ई हाथ हमर, ई पएर हमर
ई आ□खि हमर, ई कान हमर
ई देह हमर, ई मोन हमर
ई प्राण हमर, ई □यान हमर
हम छी स्वामी एहि काया केर
अछि ई रहस्य क्यो बुझा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(69)

झंकार उठल, टंकार उठल
ओंकार उठल, जयकार उठल
मधुबनीस□ दिल्ली धरि
'जय मैथिली' हुंकार उठल
प्राप्त कएल अधिकार अपन
जे मंगनीमे छल छिना गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(70)

नहि द्रोण थिका आदर्श हमर
नहि श्लोक रटल हम गीताकेर
हमरा अन्तस्थलमे एखनहु□
अछि नाम एकटा सीताकेर
जे स्वयं समाक' धरतीमे
दुनिया भरि के □ छथि जगा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(71)

जतबा धरि शुभ अछि जीवनमे
से अछि प्रसाद सतसंगति केर
आहार-विहारक नियमितता
शुभ चिन्तन केर आ सद्‌मति केर
गुरुजन आ प्रियजन आशीषक
अनमोल रत्न छथि लुटा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(72)

नहि गेलहु□ हम काशी-प्रयाग
नहि केलहु□ हम कबुला-पाती
कयलनि जीवन भरि व्रत-उपव्रत
बाबी आ मा□ सभहक साती
हुनकहि आशीषक गंगामे
भरि पोख मोन अछि नहा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(73)

क्षमा करू हे पिता हमर
बरखी ओहिना नहि करब हम
नहि केश कटायब बेर-बेर
नहि भोज-भातमे पड़ब हम
हम मानब ओकरहि क्रिया-कर्म
जे दिनचर्यामे समा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।

(74)

क्षमा करू हे मित्र हमर
नहि आँखि मूनि क' चलब हम
जे सहज, सरल आ सुन्दर हो
ओही रस्ता पर बढ़ब हम
अपनहि इतिहासक पन्ना किछु
आंगुर हमरा पर उठा गेल,
हम सोचि रहल छी, जीवनमे
की भेटल आ की हेरा गेल ।



बाबा

स्व. अनन्त लाल ठाकुरक

पैतालिसम पुण्य तिथि पर

हुनक

पावन स्मृति के □

नमन करैत

दीयावाती,
23.11.2013

□ जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

बुच्ची बढ़ती, लिखती पढ़ती !

बुच्ची बढ़ती, लिखती-पढ़ती, हमरा चिन्ता कथी के
भाग्य अपन अपनेस□ गढ़ती, हमरा चिन्ता कथी के

रेप - दहेजक दानवकेर
उत्पात मचल अछि भारतमे

महिषासुर ले' दुर्गा बनती, हमरा चिन्ता कथी के

ज्ञान और विज्ञानक सम्पति
अर्जित करती जीवनमे

नव सुरुज आ चान बनेती, हमरा चिन्ता कथी के

लोकक मोल बुझै छै एखनो
लोक बहुत छै दुनियामे

संगी अप्पन अपने चुनती, हमरा चिन्ता कथी के

अपनहि श्रमस□ बाट बनेती
एहि बबूरके जंगलमे

'किरण', 'सुनीता', 'मीरा', बनती, हमरा चिन्ता कथी के



(प्रकाशित : विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह-सदेह 9)

हमरहि खातिर सुरुज उगै छथि

हमरहि खातिर सुरुज उगै छथि
हमरहि खातिर चान
हमरहि खातिर कोटि तरेगन
हमरहि ले' आसमान ।

हमरहि खातिर सा□झ पड़ैए
राति स□ होइए प्रात
हमरहि खातिर रौद अबैए
हमरहि लेल बसात

हमरहि खातिर गाछ फड़ैए
जामुन, आम, लताम ।

पानि तपैए, भाफ बनैए
भाफ उड़ैए, मेघ बनैए
सेहो हमरे ले' ऊपरस□
धरती पर रिमझिम बरसैए

हमरहि खातिर धरती मैया
देथि गहूम आ धान ।

हमरहि खातिर फूल फुलाइछ
उज्जर-पीयर-लाल
कतहु असीमित सागर अछि त□
पर्वत कतहु विशाल

सभटा हमरहि लेल बनाक□
नुका गेला भगवान ।



(प्रकाशित : विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह-सदेह 9)

मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर

मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर,
तों त हमरा पढ़ा–लिखादे
कर नहि कनियों कथूक डर ।

तिलक–दहेजक बल पर किन्हु
ह'म कतहु नहि करब बियाह
अज्ञानी, ढ़ोंगी, पाखण्डीक
संग नहि जीवन करब तबाह

अपन पएर पर ढाढ़ हैब हम
होयब अपनहि पर निर्भर,
मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर ।

सम्पति अर्जित करब सतत हम
ज्ञान और विज्ञानकेर
नाम बढ़ायब हम दुनियामे
सगरो हिन्दुस्तान केर

हमर स्वप्नमे 'किरण', 'कल्पना'
सतत कानमे हुनकहि स्वर,
मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर ।

हम्मर गहना होयत मम्मी
हमर आत्म विश्वास टा
विजय अन्ध–विश्वासक ऊपर
सत्यक दिव्य प्रकाशटा

जीयब स्वाभिमान केर संगहि
एतबहि अछि अभिलाष हमर,
मम्मी, तों चिन्ता जुनि कर ।

●

(प्रकाशित : विदेह मैथिली शिशु उत्सव/विदेह–सदेह 9)

आउ बाउ आउ, रूसि क' ने जाउ

आउ बाउ आउ
रूसि क□ ने जाउ
माइक कोरा सिनेहक सरोवर
अही सरोवरमे जी भरि नहाउ ।

माइक ममतामे मिसरी
माय गुण कहियो नै बिसरी

माइक सिहन्ता चान–तरेगन
ह□सि–ह□सि तकरहि स□ खेलाउ ।

बौआक मुस्की समतोला
दिन घुरौता बमभोला

सभ दुख तोरास□ डरि भागए
आबय ओ दिन सएह मनाउ ।

माइक सपना नीलगगन
तोरहि जिनगीमे यौवन

माइक हिरदय नीपल आ□न
अहा□ आश केर दीप जड़ाउ ।

माइक मनोरथ ओ उपवन
फूलय जत' नित नूतन सुमन

बाट तकैए हरियर धरती
नमहर–नमहर डेग बढ़ाउ ।

●

(प्रकाशित : 'माटि पानि' दिसम्बर 83)

उठ-उठ बौआ भेल परात

उठ-उठ बौआ भेल परात
तोड़ नि□, सीरक कर कात
बौआ रे □□□ बौआ रे □□□
दुइए बरखके नन्हा-मुन्हा
ओ तखनहि गेला सुरधाम
नगर केहेन जे पैंच ने भेटय
नहि उधार भेटय भरि गाम
हम नहि कतहु पसारल हाथ
घरमे सा□झक सा□झ उपास
बौआ रे □□□ बौआ रे □□□
स्नेहक सिंचित दूध पियाकय
पोसलियौ हम तोरा
कखनहु प्रेमे राखि माथ पर
कखनहु राखी कोरा
पूरल वयस जखन तोर सात
डोलय □दय पुरैनिक पात
बौआ रे □□□ बौआ रे □□□
छल अन्हार हमर जे आ□न
पसरल ततय इजोरिया
यौवन फेर पलटि लए आयल
तोर किशोर उमेरिया
आइ कहत के बुढ़िया
फूजल प्रेमक पुड़िया
बौआ रे □□□ बौआ रे □□□
कान खोलि क' सुनि ले बौआ
तों भारत माए केर सन्तान
जकरा लए सीमापर लड़इत
बापो तोहर देलखुन जान
रखिहे □ बौआ माए केर लाज
देखिहे □ खसौ ने माथक पाग
बौआ रे □□□ बौआ रे □□□

●

(प्रकाशित : 'माटि पानि' दिसम्बर 1983)

चल बहिना चल बहिना

चल बहिना चल बहिना
चल बहिना चल बहिना
चल घूमैले' मेला
दुरगाजीके मेला ।
केश बन्हलें, दाइ काजर कर
नूआ बदल दाइ जल्दी चल
घरक छोड़ झमेला
दुरगाजीके मेला ।
मेलामे भीड़-भाड़ बचि क□ चलिहे □
लागउ ने ठेस दाइ देखि क□ चलिहे □
होइ छै ठेलम-ठेला
दुरगाजीके मेला ।
सरकस देखिहे □ ठेठर देखिहे □
कठपुतली के खेला देखिहे □
झुलिहे □ लछुमन-झूला
दुरगाजीके मेला ।
रीबन किनिहे □ चोटी किनिहे □
अलता किनिहे □ टिकुली किनिहे □
चूड़ी बनारस बाला
दुरगाजीके मेला ।
कचरी खइहे □, घुघनी खइहे □
गरमे-गरम जिलेबी खइहे □
तीसी तेल बाला
दुरगाजीके मेला ।

●

(प्रकाशित : 'माटि पानि' दिसम्बर 1983)

बच्चू, ई दुनिया गोल छै

बच्चू ई दुनिया गोल छै,
श्रमस□ जे क्यो देह चोराबय
तकर ने किछुओ मोल छै ।
बनिह□ बच्चा वीर भगत सिंह
जपतह दुनिया तोरहि नाम
सत्यक खातिर मरि गा□धीजी
पूजित होथि जेना भगवान
ऊठि देखाबह तों दुनियाके □
की ऐ देहक मोल छै ।
चिक्कन–चुनमुन भेषे रखने
क्यो बनैछ नहि पैघ हौ
कोढ़िया बेटो के □ सभ बूझय
जेना गराके घेघ हौ
देखह कारी खटखट कोइलिक
केहेन मनोहर बोल छै ।
श्रमक बदौलति सभ किछु भेटतह
कहल हमर ई मान□ हौ
बिनु श्रम केने किछु नहि भेटतह
से धरि पक्का जान□ हौ
फोलह आ□खि बढ़ह सत्पथ पर
बचल समय बड़ थोड़ छै ।
बून्द-बून्द स□
अछि भरैत सर
श्रमस□ □मशः
गति पबैछ नर
बनल रोम नहि एक दिवसमे
ई सगरो अनघोल छै ।

●

(रचना : 2.3.1972)

कह जय गा□धी जय जयप्रकाश

कह जय गा□धी जय जयप्रकाश
जय जय सुभाष जय भगत सिंह
ओ नहि रहला लेकिन अछिए
ओइ कर्मवीर केर चरण–चि□
जिनका बल पर खूजि सकल छल
सभहक हाथक हथकड़ी,
भाइ, आइ थिक छब्बिस जनवरी ।
आजुक दिन ले' जान देने छथि
रत्न कतेको भारतवर्षक
आजुक दिनमे सजल–धजल अछि
स्वप्न कतेको भारतवर्षक
बहुत गमौला पर ई भेटल
से धरि कखनहु नहि बिसरी,
भाइ, आइ थिक छब्बिस जनवरी ।
देशक खातिर माटिक खातिर
क' दी हम तन–मन–धन अर्पण
मातृभूमिकेर वलिदानीकेर
पूर हेतनि सभ सपना तैखन
तील–कूश–गंगाजल ल' क'
चलू इएह संकल्प करी,
भाइ, आइ थिक छब्बिस जनवरी ।

●

(रचना : 26.01.1979)

सत्य अहिंसा केर पुजारी

सत्य, अहिंसाकेर पुजारी
छला महात्मा गा□धी,
ज्ञान बड़की पैघ बखारी
छला महात्मा गा□धी

ओ कहलनि
एके छथि अल्ला-ईश्वर
एके थिक मन्दिर-मस्जिद
एके थिक काबा-काशी
भारतवासीकेर
मूल एक थिक
जाति एक थिक
सभ छथि भारतवासी

दुनियामे सभस□ उपकारी
छला महात्मा गा□धी ।

सत्याग्रहके
केलनि तेहेन प्रचार
इंगलैण्डोमे
मचि गेल हाहाकार
भागल
भुल्ला
ल□-प□
सात समुन्दर पार

ब्र□ा, विष्णु आओर त्रिपुरारी
छला महात्मा गा□धी ।

ओ कहलनि
सौंसे
दुनियाकेर
बनय एकटा गाम
सभके □
भेटै
रोजी-रोटी
सभ चुआबय घाम

बूझि पड़ैए भव भय हारी
छला महात्मा गा□धी ।

●

(रचना : 21.12.1973)

हम भारत के पूत

हम भारत केर पूत
पुजै छी भारती के □ह्म
जपैछी 'वन्दे मातरम्' ।

लाल बहादुर केर नारास□
गू□जि उठल छल हिन्दुस्तान
चिकरि क' कहलनि सभस□ पहिने
जय जवान जय जय किसान

'जय जवान जय-जय किसान'
नारा लगबै छी हम,
जपै छी 'वन्दे मातरम्' ।

ताल ठोकैए हमर हिमालय
ललकि कहै छथि जमुना-गंगा
फहराइते इ रहत अमर भए
लाल किला पर हमर तिरंगा

अपन स्वतंत्रता गमा एको छण
रहि ने सकै छी हम,
कही तें 'वन्दे मातरम्' ।

लक्ष्मी, सुभाष आ भगत सिंह
एखनहु भारतमे छथि जिबइत
स्वतन्त्रता केर वलि-बेदी पर
प्राण अपन अर्पित करइत

स्वर्ग तुच्छ आजादीक आगा□
सएह बुझै छी हम,
कही तें 'वन्दे मातरम्' ।

हम मैथिल, बंगाली
वा पंजाबी कि मद्रासी
सभहक मातृभूमि थिक भारत
सभ छथि भारतवासी

अनेकतामे एकता केर
रंग भरै छी हम,
कही ते □ 'वन्दे मातरम्' ।

●

(रचना : 20.12.1973)

भोरे सभकें आबि जगा

भोरे सभके □ आबि जगा
कोइली हमरा आ□न आ ।

घरहुमे भ' गेल दुगोला
सभके □ प्रेमक पाठ पढ़ा ।

बात-बातमे खापड़ि फू□य
सभकें सुन्दर बोल सिखा ।

सभ घर लागय अपने घर
एहेन सिनेहक दीप जरा ।

लक्ष्मी आबथु सभ घरमे
दरिद्रता के □ दूर भगा ।



(पटना/01.11.2012)

आ□खिमे चित्र हो मैथिली केर

आ□खिमे चित्र हो मैथिली केर
□दयमे हो माटिक ममता,
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस इएह एकटा सिहन्ता ।

अछि करेजाक टुकड़ी हमर ई तिरंगा
धमनीमे हिमालय आ शोणितमे गंगा
अछि हमरा ऐश्वर्यक कोनो चाह नै
बाट चलिते विपत्ि□ाक परवाह नै
हम टुटि जा सकै छी, हम झुकि ने सकब
तूफानोक भयस□ हम रूकि ने सकब
हमरा संग-संग बहय उनचासो पवन
बांधि धेने छी तें माथमे हम कफन
हम रही ने रही ई तिरंगा रहय
ई हिमालय रहय आ ई गंगा रहय

फेर वनबास ने होइन्ह रामक
फेर जंगलमे कानथि ने सीता,
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस इएह एकटा सिहन्ता ।

कल्पनामे करोड़ो नदी आ नहरि
भावनामे हो लाखो समुद्रक लहरि
चिन्तनमे उठैत अछि तेहने लहास
जेना हाथ होथि ओड़ने भगत आ सुभाष
माटि चमकैए माथ पर जन्म भूमिकेर
हमर कर्मभूमि केर हमर धर्मभूमि केर
जत□ खल-खल जानकीक आंगन ह□सय
आ चकमक सावित्रीक कंगन करय
वीण अपनहि बजैब हम भारतीक, मित्र
मरितो दम तक सजाएब हम मैथिलीक चित्र

गीतमे राखि □ान्तिक ज्वाला
सरगममे विजयकेर भनिता
माएक सेवामे जीवन बितादी
अछि बस इएह एकटा सिन्हता ।



(प्रकाशित : 'मिथिला दर्शन' सितंबर-अक्टूबर 2011)

की हिन्दू आ की मुसलमान

की हिन्दू आ की मुसलमान
एके शोणित, एके परान
मिथिलाक माटि पर रहनिहार
बस, एक बात हम मानै छी,
हम मिथिला केर छी, मैथिल छी ।
मन्दिर पूजी, मस्जिद पूजी
प्रार्थना करी आ नमाज पढ़ी
गीता पढ़ि ली आ कुरान पढ़ी
अल्लाह कही, सियाराम कही
पोथी अनेक अछि सूत्र एक
बस, एक मंत्र हम जानै छी
हम मिथिला केर छी, मैथिल छी ।
सभकें भेटै रोजी-रोटी
आ सभहक वाणीकें आदर
सभहक चलबा ले' बाट रहय
नहि बाट रहय ए□ो पातर
हम सभ सिनेहकेर भूखल छी
हम एतबहि सभदिन मांगै छी,
हम मिथिला केर छी, मैथिल छी ।
हम मैथिल छी, हम भारत केर
भारतक करेजा केर टुकड़ी
देशक माला केर एक फूल
ई बात ने कहियो हम बिसरी
आजादी देशक, प्राण हमर
से सभ दिन स□ हम मानै छी,
हम मिथिला केर छी, मैथिल छी ।



(प्रकाशित : 'मिथिला दर्शन' सितंबर-अक्टूबर 2011)

मैथिलीक प्रतिमा सजाउ

सजाउ हे यै बहिना
मैथिलीक प्रतिमा सजाउ ।

रूप तेहेन जे देखय दुनिया
माथ झुकाबय मारि ठेहुनिया□

अनुपम छटा ओ देखाउ ।

अंग-अंग मे कोइली कुहुकय
सा□स-सा□स मलयानिल सिहकय

वसन्तेक आ□चर ओढ़ाउ ।

नयन नोरायलि रहलि पियासल
कहिया धरि करती हरिबासल

स्नेह क स□चार लगाउ ।

पहिरा दीयनु प्रेमक माला
हाथ लिय□ दुभि-धान आ डाला

बाट विजय केर चुमाउ ।



आजुक राति कथी ले'

आजुक राति कथी ले'रे भैया
आजुक राति कथी ले',
माटिक ममता सोर करैए
सएह समाद सुनैले' ।

गाम कहैए
घ□र कहैए
गाछी-बिरछी
च□र कहैए जामुन आम लताम कहैए
घुरि-घुरि फेर अबैले' ।

मिथिला खोंता
चिड़ै छी हम सभ
भेल सा□झ, घर
घुरै छी हम सभ
जहिना चिल्हका बेकल रहैए
माइक कोर चुमैले ।

एक जाति अछि, एक धर्म अछि
सभ मिथिला केर, सभ छी मैथिल,
माइक भाषा सम्मानित हो
से थिक सभहक मोनक मंजिल
सभहक □दयक एके धड़कन
माटिक मोल बुझैले' ।

जकरा चारि कोटि संतति छै
से अनाथ नहि भ□ सकैत अछि
एक-एक वनिता सीता जतहुक
कहू त की ने क□ सकैत अछि
आयल छी हम दूते बनि क□
□ान्तिक संख फुकै ले'
भैया, आजुक राति अही ले' ।



तीन कोटि मैथिल

तीन कोटि मैथिल ताल ठोकि क' कहैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए ।

व्यर्थ हमर जिनगी
आ व्यर्थ हमर प्राण
हमर दर्द ज□ ने
बूझि सकल संविधान

हमर संस्□ति के □ कियो सोखि ने सकैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए ।

भीख नहि मंगैत छी
अधिकार चाही
आश्वासन ने लै छी
व्यवहार चाही

आ□खिमे आब गरदा कियो झोंकि ने सकैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए ।

ई डेग जे बढ़ल अछि
से ताधरि ने रूकत
हमर मांग एतबो
जा धरि ने पूरत

आब हमर गरदनि कियो मोकि ने सकैए
ई प्रवाह मैथिलीक कियो रोकि ने सकैए

●

(प्रकाशित : 'मिथिला मिहिर' 26.02.1984)

जय भारत जय भारती

आउ आइ हम सभ हिलि-मिलि क□
मा□क उतारी आरती
गाउ जय मिथिला, जयति मैथिली
जय भारत, जय भारती ।

दूभि-धान लए शान्ति-अहिंसाक
पूजब हम प्रतिमा सत्यक
ज्योति अखण्ड जरायव घर-घर
गा□धी केर अभिनव □त्यक

आइ स्वप्न दर्पणमे जननी
अनुपम रूप निहारती
गाउ जय मिथिला, जयति मैथिली
जय भारत, जय भारती ।

चाकर बनला जतय सदाशिव
विद्यापतिक दुआरि पर
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' गबैत अछि
कोइली आमक डारि पर

जनम-जनम तह□ जनकक आ□न
सीते कलुष बहारती
गाउ जय मिथिला, जयति मैथिली
जय भारत, जय भारती ।

हम कल्पना करी एकटा
भारतवर्षक गाम केर
जैमे हो बस जाति एकटा
मात्र भारतीय नाम केर

रहथु सहाय जननि जगदम्बे
बिगड़ल काज सम्हारती
गाउ जय मिथिला, जयति मैथिली
जय भारत, जय भारती ।

●

(रचना : 19.11.1972)

कर जोड़ि करै छी प्रणाम

कर जोड़ि करै छी प्रणाम
मैया दुरगा
कर जोड़ि करै छी प्रणाम ।

मा□, हम सभ मिथिलाके बासी
घ'रे हमर कामाख्या आ काशी

च□रे मे पावन तोहर धाम
मैया दुरगा
च□रे मे पावन तोहर धाम ।

घरमे रही चाहे बाहर रहै छी
महिमा तोहर मा□ नहि बिसरै छी

सूति उठि लै छी तोरे नाम
मैया दुरगा
सूति उठि लै छी तोरे नाम ।

भक्तक छौ मा□, हाल बे-हाल
हेतै ज□ रौदी एना साले-साल

त कोना क' चढ़ेबौ फूलो-पान
मैया दुरगा
कोना क□ चढ़ेबौ फूलो-पान ।

मा□, मिथिला केर कष्ट हरी हम
सभ बाधाके □ नष्ट करी हम

दीय□ हमरा इएह वरदान
मैया दुरगा
दीय□ हमरा इएह वरदान ।

●

दिनकर दुख हरता

पथिया लीय□ बासन लीय□
कूरा कोसिया ढ़ाकन लीय□

चलू-चलू पोखरि मोहार
दिनकर दुख हरता ।

हुनके पुजैले' भैया□ ताकथि अकाश
तीन-तीन दिन धरि केलनि उपास

ठकुआ लीय□ केरा लीय□
लड्डू लीय□ पेड़ा लीय□

चलू-चलू पोखरि मोहार
दिनकर दुख हरता ।

हिनकर महिमा जनैछ संसार
ओ छथि त□ इजोत नै त□ सगरो अन्हार

दीप लीय□ धूप लीय□
कोनिया□ लीय□ सूप लीय□

चलू-चलू पोखरि मोहार
दिनकर दुख हरता ।

जगियौ यौ जगियौ बाबा उठियौ यौ उठियौ
फाड़ि क□ कुहेस बाबा धरती पर अबियौ

यौ घरे - घरे बुलियौ
यौ देखियौ यौ देखियौ

मिथिलामे दुखक पहाड़
बाबा हरि लीयौ □□ ।

●

स्वतंत्र भारत अमर रहय

हमरा सभस□ प्रिय अ□-पानि
ताहूस□ प्रिय अछि देह अपन
देहोस□ प्रिय अछि प्राण हमर
प्राणहुस□ प्रियगर अछि मिथिला
मिथिलोस□ प्रिय अछि भारत
भारतहुस□ प्रियगर
भारतवर्षक स्वतन्त्रता
तें हम हुलसि-हुलसि क' बाजी
स्वतंत्र भारत अमर रहय ।

अ□-पानि केर की महत्व ज□ देहे नै
खाली देहक की महत्व ज□ प्राणे नै
हमर प्राण केर की महत्व ज□ मिथिला नै
ओइ मिथिला केर की महत्व ज□ भारत नै
ओइ भारतकेर की मतलब
ज□ हो नै एकरा स्वतन्त्रता
तें हम जान-प्राणस□ बाजी
स्वतन्त्र भारत अमर रहय ।

मिथिला मैथिलीक विकास लेल
हम बजिते टा नहि, करितो छी
भारतक स्वतंत्रता केर खातिर
हम लड़िते टा नहि मरितो छी

गमकैत रहय मिथिला युग युग
चमकैत भारतक स्वतन्त्रता
तें हम ताल ठोकि क' बाजी
स्वतन्त्र भारत अमर रहय ।



मैथिली ले' अहा□ की करै छी

गूर-चाउर मोने-मोने फ□कै छी
बात लाखो करोड़क ह□कै छी
राखि छाती पर हाथ कनी सोचू अहा□
मैथिली ले' अहा□ की करै छी ।

संस्था जे बनै छै से अहिना बनै छै
आ बनि क□ टुटै छै से अहिना टुटै छै

कोनो पोथी ने एकटा किनै छी
पत्रिका ने कोनो टा पढ़ै छी
लड़बाक छल मैथिली ले, मुदा
सिकरेटरी बनै ले' लड़ै छी ।

जौड़ो जे जरै छै से अहिना जरै छै
ऐंठन जे रहै छै से अहिना रहै छै

अहा□ तरे-तरे बिठुआ कटै छी
अहा□ मु□ह देखि मु□बा ब□टै छी
खुनयबाक छल जत' नवका इनार
अहा□ खुनलो कें झट-झट भरै छी ।

समय जे बितै छै से अहिना बितै छै
जत' जे छुटै छै से अहिना छुटै छै

बात आगुक अहा□ ने सोचै छी
अहा□ कण्ठ अपन अपने मोकै छी
ई दुगोला हटाउ, दीप प्रेमक जराउ
हम हाथ जोड़ि एखनो कहै छी ।



(प्रकाशित : मिथिला मिहिर/20.09.1984)

जय जय हिन्दुस्तान

हम नहि जायब मास करै ले'
हम नहि करब उपास,
अपनहि मन मन्दिर बनि पाबय
तकरहि करब प्रयास ।

नहि जायब हम काबा-काशी
वा वृन्दावन धाम,
हम त प्रेमक दीप जरायब
घुमि-घुमि अपनहि गाम ।

रामायण, गुरुग्रंथ आ गीता
बाइबिल आओर कुरान,
स'भ ग्रन्थ केर मूल-मन्त्र थिक
सभ जीवक कल्याण ।

चानन-ठोप पाग आ डोपटा
जप-तप-योग धियान
स'भ □यानस□ सुन्दर लागय
देश भक्ति केर □यान ।

एकहि मन्दिर एकहि पूजा
आ एकहि टा □यान
एकहि मन्त्र जपब जीवन भरि
'जय-जय हिन्दुस्तान' ।



(प्रकाशित : 'भारती मंडन' अंक 3, जुलाई 96 - जून 97)

अरे राम राम राम

आएल केहेन समैया
यौ बाबू यौ भैया
दुनिया□ स□ उठि गेल धरम-करम
बूझैए के धरतीक मरम
मिथिला केर की बात पुछै छी
सौंसे भारत भेल बदलाम
अरे राम राम राम
अरे राम राम राम ।
स□ाो बाबू झूठ बजै छथि
□पानाथ जी घेंट कटै छथि
भलमानुष गोव□न बाबू
मधुशालामे बात छ□टै छथि
अलख निरंजन भोला बाबू
जेबीमे छूरी मू□ह सियाराम
अरे राम राम राम
अरे राम राम राम ।
सगर चिड़ैता चिकड़ि कहैए
हमही असली शरबत छी
गोबरक ढ़ेरी ताल ठोकैए
ह□म हिमालय परबत छी
टनटनाइत टीपैए टाका
हमहीं छी सभहक भगवान
अरे राम राम राम
अरे राम राम राम ।
लसकि गेल अछि राजनीतिमे
देशक प्रजातन्त्र केर गाड़ी
छटपट करइछ आइ करोड़ो
'त्राहि □ष्ण' करइत नर-नारी
भारतकेर प्रजा पौलनि
परतन्त्रे रहबा केर वरदान ?
अरे राम राम राम ।
अरे राम राम राम ।



मन्द समीरण बहय सदिखन

मन्द समीरण बहय सदिखन
कुसुम-कुसुम केर हिलसय मन
चह□दिस भ्रमर करय गुंजन ।

धरतीक पिपासा जागल
कण-कणमे मदिरा व्यापल,
चेतन केर की कथा जड़हुमे
आबि गेल अछि नव जीवन ।

एहने सन लागि रहल अछि
मादकता बरसि रहल अछि,
देखि प्र□तिक छटा मनोहर
नाचि उठल अछि मन-उपवन ।

बगियामे कोइलिया गाबय
सभ केर जिया तरसाबय
अहा□ बिना जीवन लगैत अछि
जेना लवण विनु हो व्यंजन ।

●

(रचना : 19.02.1972)

तखन सुख की बुझबै

जखन घरेवला छथि कसाइ
तखन सुख की बुझबै ?
हिनका ले सभ मीठ
हम खाली तीत छी
मू□हक दुलार बुझू
फूसिक पिरीत छी
कहियो जनलौं ने दोकरो कमाइ
तखन सुख की बुझबै ?
किरपिन केहेन छथि
तहिये बुझलियनि
मु□हबजना मे दू टा
टाका देखलियनि
लाजे क□ाहु ने बजलौं गे दाइ
तखन सुख की बुझबै ?
केहेन निसोख छथि
ओइ दिन चिन्हलियनि
खिड़कीवला ब्लाउज
आन□ कहलियनि
भरि घरमे देलनि नचाइ
तखन सुख की बुझबै ?
पुरूषक लाचारी
बुझैत छिऐ हमहू□
औना-पथारी
देखैत छिऐ हमहू□
मा□ काली ! अहीं केर दोहाइ
जेना रखथिन तेना रहबै ।

●

(रचना : 1974)

समधि एला बनि-ठनि क□

समधि एला बनि-ठनि क□
धोती कुरता पहिरि क□
एला डहकन सून□ बेटाके बियाहमे,
हम सभ करै छी पुछारि
बाजू गीत सुनब कि गारि
आकि उलहन सूनब बेटाके बियाहमे ।

ककरास□ माँगि क□ धोती पहिरलौं
ककरास□ लेलियै कुरता
ककरास□ लेलियै पाग आ मिरजइ
ककरास□ लेलियै डोपटा

कहू त कारी चून लगादी
अहा□ के□ गदहा पर बैसादी
गामक परिछन करब बेटाके बियाहमे ।
लाजो ने भेल जे टाका गनेलियै
बेटा के□ बेचि क' खेतो किनलियै
लोक ह□सैए जे ई की केलियै
ई की केलियै, ई की केलियै

केहेन अछि छोटका खनदान
घिनेलौं सौंसे गामक नाम
तें त□ उलहन दै छी बेटा के बियाहमे ।

पएरमे बेमाए अछि फाटल
त कोना क' एलियै यौ बूढ़ा
दा□त अछि एको ने बा□चल
त कोना चिबेलियै मूड़ा
अजगुत लगैए गे दाइ
बुढ़बा टुप-टुप खेने जाइ
बुढ़बा मारल जेतै बेटाके बियाहमे । (1976)

●

घरे कें मन्दिर बनाउ

बनाउ हे यै कनिया□
घ□रे कें मन्दिर बनाउ ।

कखनहु घर अन्हार रहय नहि
अखण्ड ज्योति प्रेमक जराउ ।

गमकय भरि घर-आ□गन गम-गम
बातें कें बेली बनाउ ।

हो सिनेह मनमे सभ जन ले'
आसक अछि□जल चढ़ाउ ।

धूप-दीप-नैवेद्य हो करूणा
सेवा कें पूजा बनाउ ।

सासु-ससुर छथि देवी-देवता
श्र□ास□ माथा झुकाउ ।

●

(प्रकाशित : 'मिथिलायतन' (रायपुर) दिसंबर 2005)

हम आ□न छी, अहा□ अरिपन छी

हम आ□न छी, अहा□ अरिपन छी
चिनुआर छी हम, अहा□ बासन छी

हम एके चुल्हा केर जारनि
हम सिदहा छी, अहा□ अदहन छी ।

नहि फूल अहा□, नहि हम भमरा
नहि जाल अहा□, नहि हम मकरा

हम एके सूपक दू भा□टा
हम नोन थिकहु□, अहा□ तीमन छी ।

नहि चान अहा□, नहि हम चकोर
नहि मेघ अहा□, नहि हम छी मोर

हम एके घरक दू खंभा
हम छी अरा□च, अहा□ धरनि छी ।

नहि सा□झ अहा□, नहि हम छी भोर
ने अन्हार अहा□, नहि हम इजोर

हम एके गीतक दू पा□ती
हम भास थिकहु□, अहा□ सरगम छी ।

नहि रौद अहा□, नहि हम बरखा
नहि तूर अहा□, नहि हम चरखा

हम एके नि□क दू सपना
हम आगि थिकहु□, अहा□ धूमन छी ।



आकाशक च□ा आ तारा

आकाशक च□ा आ तारा
कथमपि आहा□ नहि मांगू,
जाहि डारि पर बैसल छी अहा□
ओहि डारि के □ नहि पांगू ।

सबहक खून-पसेना केर
ई धरती थिक माइक आ□चर
कुमहर आओर कदीमा बुझि क□
कथमपि एकरा नहि भांगू ।

सभक करेजा केर टुकड़ी ई
आजादीक अनमोल रतन
जाति-धर्म-भाषा विवाद पर
कथमपि एकरा नहि टांगू ।

शान्ति अहिंसा केर मूल्य पर
बात कोनहु नहि करू अहा□
छूटि जाय किछु, टूटि जाय किछु
ततबा एकरा नहि तानू ।



चि□□ी लीखि रहल छी

कोना कहू जे कोन हालमे जीबि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

पर्वत केर कायास□ निकलय
कोयला कारी-कारी
घूम-घुमौआ रस्ता पर अछि
चलइत मोटर गाड़ी

कारी-कारी गाछ-पात सभ देखि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

ठाम-ठाम पर्वतक आ□खिस□
नोरक बहय टघार
जहा□-तहा□ मजदूर चलैए
नेने पानिक भार

एत' आबि क' पानि कीनि क' पीबि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

अछि पहाड़ पर जहा□-तहा□
माटिक सुन्दर घ□र
मुदा जखन नीचा□ तकैत छी
होइए सरिपहु□ ड□र

आगा□ निहुरि-निहुरि क' ससरब सीखि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

मोन पड़ैए एत' आबि क'
सीवानक संसार
मोन पड़ैए गाम-घर आ
हरियर खेत-खम्हार

हम कल्पना केर डारि पर झूलि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

मोन पड़ैए चूड़ा-दही
चीनी आओर अ□चार
कविता गीत गजल के खातिर
जहा□-तहा□ बैसार

एत' तपस्वी केर भोग हम भोगि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

बिजली रानी सतत रहै छथि
तें त अछि किछु मौज
साधू केर कुटी सन लागय
अनमन दीपक लौज

एतहि ठाढ़ भए स्टेशन दिस देखि रहल छी
हम पहाड़ पर बैसल चि□□ी लीखि रहल छी ।

●

(चिरिमिरी (छ.ग.)/22.12.1992)

मैथिल केर परिभाषा

मिथिला आ मैथिलीक खातिर एक प्रवल अभिलाषा
प्रस्तुत अछि अपने केर सोझा□ मैथिल केर परिभाषा ।

से छथि मैथिल, मैथिलीक जे पोथी कीनि पढ़ै छथि
पढ़थि पत्रिका, अपनहु जागथि आ अनकहु जगबै छथि
की अनुचित की उचित एहिपर सदिखन नजरि रखै छथि
सत्य आओर प्रिय बात बजै छथि, अनकहु बात सुनै छथि
माटि पानि केर मोल बुझै छथि आ अनकहु बुझबै छथि
अनकहु अनुभवस□ सीखै छथि, अनुभव अपन ब□टै छथि

संतति केर समुचित शिक्षा पर सम्यक खर्च करै छथि
कन्या आ बालकक म□य जे नहि किछु फर्क करै छथि
जे जीवनमे ज्ञान और विज्ञानक महिमा जानथि
जे ने कनाबथि कन्यागत कें आ नहि अपनहु कानथि

जे अपना पौरुषस□, श्रमस□ अपनहु गुजर करै छथि
अपनहि कौशलस□ दुनियामे नव इतिहास रचै छथि

से मिथिला केर, से छथि मैथिल, इएह हमर अभिलाषा
छोड़ू जाति-धर्म केर नखरा, रगड़ा आओर तमाशा ।

●

(रचना : 09.05.2011)

पटनाक मजा लीय□

पटनाक मजा लीय□
दिल्लीक मजा लीय□
बेकार छी अहा□ त□
बंबईक मजा लीय□ ।

बजबाक मजा लीय□
खयबाक मजा लीय□
लाचार छी अहा□ त□
देखबाक मजा लीय□ ।

चलि दीय□ तेमहर
डेग उठय जेमहर
बस चढ़ू, ट□न चढ़ू
पकड़ू स्टीमर

रिक्शाक मजा लीय□
टमटमके मजा लीय□
अछि खाली ज□ जेबी
पैदल के मजा लीय□ ।

चलू-चलू ओम्हरे
भीड़ देखू जेम्हरे
हउए देखू जूलुस
आबि रहल एम्हरे

जूलुस के मजा लीय□
पूलिस के मजा लीय□
ज□ लागि गेल लाठी
'इस्स-इस्स'के मजा लीय□ ।

छथि मामा एमेले
त भेंट क' आउ
मोनक भरमके □
मेटौनहि जाउ

बाबूक नाम लीय□
कक्का क नाम लीय□
इमप्लायमेंट एक्सचेंजमे
धक्काक मजा लीय□ ।

(1975)

●

तेहेन बात नै कहू

ओहिना त मोन धह-धह जरिते रहैत अछि
फाटि जाए करेज तेहेन बात नै कहू ।

मोनक ई घर फूसक चिनगी उड़ैछ छण-छण
जरि जाएत सगर गाम, एखन बसात नै बनू ।

बा□टल अछि चर-चा□चर कतेक आरि-धूर स□
अहा□ का□ट स□ भरल एखन बाट नै बनू ।

इतिहास केर घैल अछि नोर स□ भरल
तै ले' अहा□ पुरैनिक एखन पात नै बनू ।

संगी हमर बनी त□ बरू सा□झे बनि रहू
कुहेसस□ भरल एखन प्रात नै बनू ।

●

(प्रकाशित : 'समय-साल' मइ-जून 2011)

पाथरके □ भगवान बुझै छी

पाथरके □ भगवान बुझै छी, धन्य अहा□
भगवानक अपमान करै छी, धन्य अहा□ ।
ब्र□ थिका ओ जे आतुर छथि
सुन्दर सृष्टि रचैले'
और मनुक्खक जीवनमे
आनन्दक वृष्टि करैले'
की हुनकर सम्मान करै छी (?) धन्य अहा□
भगवानक अपमान करै छी, धन्य अहा□ ।
जनिक पसेनास□ धरतीस□
उपजय गहूम आ धान
गाछी-बिरछीमे लुबधैए
जामुन - आम - लताम
की ओइ विष्णुक □यान करै छी (?) धन्य अहा□
भगवानक अपमान करै छी, धन्य अहा□ ।
ओ जे देश-समाजक खातिर
छथि करैत विष-पान
आ अखण्ड भारत केर
जिनका स□ भेटल वरदान
शिव छथि, नहि अनुमान करै छी (?) धन्य अहा□
भगवानक अपमान करै छी, धन्य अहा□ ।

●

(प्रकाशित : 'समय-साल' मइ-जून 2011)

पत्रिका नै किनै छी

पत्रिका नै किनै छी
अखबार नै पढ़ै छी
बुझिए क' हम की करबै
समाचार नै सुनै छी ।

दूर कियो भोंपू स
बेर-बेर चिकरैए
सत्य अहिंसाक मन्त्र
हमरे टा सिखबैए

कथनी आ करनीमे
सरोकर नै देखै छी ।

फूटि गेल तमघैल
छुतहर ने फूटल
फूल उपटि गेल, मुदा
काट गेल चतरल

दूर, बहुत दूर धरि
अन्हार टा देखै छी ।

बगुलाक आखि देखल
कौआक पाखि देखल
सापक गरामे अटकल
बेंगोक देह देखल

भादोक बेंग स हम
अधिकार नै मंगैछी ।

सभतरि देवाल पाइक
सभतरि सवाल पाइक
सभठाम पाइक बरखा
सभठा अकाल पाइक

पाइक बियाधि केर
कोनो उपचार नै देखै छी ।

●

(प्रकाशित : 'समय-साल' मइ-जून 2011)

नोरे के जिनगी कतेक दिन उघबें

नोरे के जिनगी कतेक दिन उघबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?
तोहर वयस जेना
कोबर केर कनिया
तोरा ले' एखनहि
अन्हार भेल दुनिया
तों अपने कपार पर कतेक दिन झखबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?
तोरा ले' सभ ठाम
सभ बाट काटल
सभ दृष्टि काटल
आ सभ गाछ काटल
ओकरास छाहरि के आश कोना करबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?
लोक तोरा सोझ भ'क'
चलहु ने देतौ
जीब' ने देतौ
आ मरहु ने देतौ
चालनिमे पानि तों कतेक दिन भरबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?
जिनगी छै सभके
आ जिनगी छौ तोरो
राति अपन देखलें
त देख अपन भोरो
बाट कोनो रामक कतेक दिन तकबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?
टूटि जेतै बन्हन
तों जोर क' क' देखही
भेटि जेतौ संगी
तों सोर क'क' देखही
हुकुर-हुकुर जीबें त जीबि क' की करबें
एना गे सुगिया कतेक दिन रहबें ?

●

(प्रकाशित : 'मिथिला मिहिर' जून 87 पहिल पक्ष)

चोर कहू ककरा

भरि गाम चोरे त चोर कहू ककरा
कोतवालो सएह तखन सोर करू ककरा !

छोट माछ पैघ माछ
आर बहुत पैघ माछ
छोट जाल, महा जाल
आर महा महाजाल

गुम्म छी जे बंसी आ बोर कहू ककरा !

छोट बा□स, पैघ बा□स
बीस आ उनैस बा□स
लहकि रहल, महकि रहल
फूलि रहल सा□स-सा□स

सभ लोक पैघे त थोड़ कहू ककरा !

भेटि गेल कारा
ढ़ेकार हम करैत छी
छी बिलाइ, मूस केर
शिकार हम करैत छी

सभ मू□ह कारी त गोर कहू ककरा !

जे भेलैक से भेलैक
आब तेना नै हेतै
हाथ हो मशाल त□
अन्हार कोना नै जेतै

मु□□ीमे भोर अछि खोलि देखू तकरा !



(प्रकाशित : 'देशज' 2001)

करजेमे जीबें आ करजेमे मरबे □?

करजेमे जीबे □ आ करजेमे मरबे □
एना रे बिलटू कतेक दिन रहबे □?

तोरे पसेनास□ हरियर ई भारत
ई राकेट, ई प्लेन, ई उ□चका इमारत
तों नारे - पुआर पर कतेक दिन सुतबे □?

तोरा ले' एखनो ने लोटा ने थारी
ओम्हर घोटाला, महल, हवागाड़ी
दोस आर दुश्मनके □ कहिया तों चिन्हबे □?

दू हाथ अनको छै दू हाथ तोरो
कटले □ अन्हार राति, देख अपन भोरो
बाट कोनो गा□धीक कतेक दिन तकबे □?

टूटि जेतै बन्हन तों जोर क'क' देखही
भेटि जेतौ संगी तों सोर क'क' देखही
हुकुर-हुकुर जिनगी कतेक दिन कटबे □?

सूतल अछि लोक तों सभके □ जगबिहे □
का□ट-कूश झारि-झारि रस्ता बनबिहे □
कनले कतेक दिन, कहिया तों ह□सबे □?



(प्रकाशित : 'देशज' 2001)

गीत कोना क□ गाबी

गोली–बारूदक मौसममे हम कविता केहेन सुनाबी
हाल देखि बे-हाल भेल छी, गीत कोना क' गाबी ?

गाम–गाम आ शहर–शहरमे आतंकक अछि छाया
ठोहि पारि क' कानि रहल अछि गौतम बु□क काया
शब्द–शब्दमे चिनगी–चिनगी, शब्द–शब्दमे धधरा
अपनहि घर हम जरा रहल छी, अप्पन–अप्पन बखरा

गामक गाम जरैए धह–धह, ककरा कोना बचाबी
एहेन हालमे कानि सकै छी, गीत कोना क' गाबी ?

टूटल सरस्वती केर वीणा केर संगीतक धारा
मनुखक छुद्र स्वार्थ पर कनइत अछि विज्ञान बेचारा
पत्रहीन सभ गाछ नग्न अछि जेम्हरे देखू तेम्हर
कत□ अलोपित भेल गाम स□ बरक गाछ झमटगर

थाकल हारल लोक सोचैए कत' कने सुस्ताबी
एहेन हालमे अहीं कहू त गीत कोना क' गाबी ?

बेर – बेर उठबैए हाबा एखानहु वएह सवाल
बु□ – महावीरक ई धरती एहेन किए कंगाल
द्रोण – भीष्म केर चुप्पी आ धृतराष्ट□क कुत्सित सपना
बेर – बेर दोहराएल जाइत अछि लाक्षागृह केर घटना

उचित इएह जे आमक खातिर आमक गाछ लगाबी
चलै–चलू हम सभ हिलि–मिलि क' अपन बिहार बचाबी ।



(प्रकाशित : 'भारती मंडन' अंक 3, जुलाई 96–जून 97)

आएल पानि गेल पानि

पटनास□ उठलै मेघ कारी–कारी
गाम–गाम मचि गेल औना–पथारी
भीजल ने खेत मुदा, बाट भेल पिच्छर
कोन टोना–टापर भ' गेलै कत□ ने जानि
आएल पानि गेल पानि बाटहि बिलाएल पानि ।

सासुरमे पीढ़ी पर बैसल क्यो ढ़ेकरैए
धन्न कही खुट्टाके □ फड़□ जे कुकरैए
हट्ठास□ आएल बरद ह□फैए नादि लग
मु□ह लागल जाबी से हुकरैए कानि–कानि
आएल पानि गेल पानि बाटहि बिलाएल पानि ।

रेडियो कहलकै जे अरियानघान भेलै
भरि मोन कात जाओ सेरो ने धान भेलै
भा□ पीबि सूति रहल तकरा पता की
कोन–कोन डबरामे जा क' नुकाएल पानि
आएल पानि गेल पानि बाटहि बिलाएल पानि ।

गंगाक पानिस□ ऊमडाम डबरा
एम्हर घर खाली आ पहरा पर पहरा
गाम–गाम पसरि गेल बड़का बिमारी
काल बनि चिकरैए सभठा□ घोंकाएल पानि
आएल पानि गेल पानि बाटहि बिलाएल पानि ।



(प्रकाशित : 'भारती मंडन' अंक 5)

पटना घुमलौं दिल्ली घुमलौं

पटना घुमलौं, दिल्ली घुमलौं
बंबई आ कलक□ा घुमलौं

सभतरि देखल चोर बजारी
सभतरि भ्रष्टाचार
भैया, सभतरि देखल
रोटीक लेल हाहाकार ।

पैसल राजनीति मन्दिरमे
गुम्म भेला भगवान
मानवकेर शोणितक पियासल
मानवकेर सन्तान

मथुरा आ वृन्दावन घुमलौं
नैनीताल, मसूरी देखलौं

एके रंगक बात कहै छल
□षिकेश, हरिद्वार
भैया, सभतरि देखल
रोटीक लेल हाहाकार ।

स□भ ठोर पर फुफरी देखल
स□भ पेटमे आगि
सभतरि धधकय धधरा धह-धह
जायब क□ा' भागि

कोशी, कमला, गंडक देखलौं
गंगा आ यमुनातट घुमलौं

सभतरि देखल पेटक खातिर
देहक अत्याचार
भैया, सभतरि देखल
रोटीक लेल हाहाकार ।

एके बात कहै छथि मैया□
गामक बूढ़ - पुरान
रामायण आ गीता कहइछ
बाइबिल आओर कुरान

ऊपर देखलौं नीचा□ देखलौं
आगा□ देखलौं, पाछा□ देखलौं

अति आवश्यक आइ भेल अछि
दानव दलक संहार
भैया, कहिया लेता
राम एतए अवतार ?

●

(सीवान / 25.08.1983)

बजबाक समय आएल अछि

जे सोचैत छी से
बजबाक समय आएल अछि
जे बजैत छी से
करबाक समय आएल अछि ।

मैथिलीक के ?
आ के मैथिल थिका,
ककरा सिनेह छै कते
बुझबाक समय आएल अछि ।

घूर तरक गप्प
सड़क पर ल' चलू,
एखन त' एक पा□तमे
बढ़बाक समय आएल अछि ।

पाग डोपटा छोड़ि
एखन बान्हू मुरेट्ठा,
एखन त' माटि-पानि ले'
लड़बाक समय आएल अछि ।

आब जे हेतै से हेतै
नीके हेतै
जे मंगैत छी से
छिनबाक समय आएल अछि ।



(सीवान / 22.02.1984)

सभ लोक आकुल

सभ लोक आकुल आ सभ परेशान
जानि ने ई गरमी कतेक दिन रहतै

धूआ□ स□ भरि गेल
घर और आ□न
दिनहुमे भरि गा□
लगैए डेराओन

चीन्हि ने पबै छी के अप्पन के आन
जानि ने इ गरमी कतेक दिन रहतै

बर केर गाछ केर
छाहरि बिलायल
पोखरि-इनार-धार
सभटा सुखायल

टुकुर-टुकुर ताकि रहल आइ आसमान
जानि ने ई गरमी कतेक दिन रहतै

सभ किछु अछैत
छी भेल भिखमंगा
चुप छथि हिमालय
आ गुम्म भेली गंगा

आनब कत' स□ आब दूभि और धान
जानि ने ई गरमी कतेक दिन रहतै



(सीवान / 12.05.84)

हमर गीत हमर मीत

हमर गीत, हमर मीत
हमर हारि, हमर जीत
हम खसैछी, उठै छी, बढ़ै छी
हम तोरा बिना रहि ने सकै छी ।

जिनगी लारनि जका□, जिनगी बाढ़नि जका□
जिनगी सूपहु जका□, जिनगी चालनि जका□

हम आगा□ आ पाछा□ तकै छी
हम तोरा बिना रहि ने सकै छी ।

जिनगी पाथर जका□, जिनगी रोड़ा जका□
जिनगी हाथी जका□, जिनगी घोड़ा जका□

हम सभठाम पसरल देखै छी
हम तोरा बिना रहि ने सकै छी ।

जिनगी कूटै छी हम, जिनगी पीसै छी हम
जिनगी घोरै छी हम, जिनगी पीबै छी हम

हम ह□सै छी, नचै छी, गबै छी
हम तोरा बिना रहि ने सकै छी ।

जिनगी जिनगी बनय, जिनगी चिनगी बनय
जिनगी खोंता बनय, जिनगी फुनगी बनय

हम एतबहि टा सपना देखै छी
हम तोरा बिना रहि ने सकै छी ।

●

नब्बेटा वरियाती एलै

नब्बेटा वरियाती एलै
हल्ला भेलै गाममे
रस्ता पेड़ा टोल घिनेलै
हल्ला भेलै गाममे ।

डंफा ढ़ोल नगाड़ा बजलै
फुटल फटक्का अनगिनती,
डा□ड़ झुला क' बुढ़बो नचलै
हल्ला भेलै गाम मे ।

दस हजार रसगुल्ला बनलै
नब्बे टा वरियाती ले'
आ पचास टा छागर कटलै
हल्ला भेलै गाममे ।

दारू पीने टंच रहै सभ
छौंड़ा मोटर सायकिल पर,
खाधिमे खसलै, टंगले एलै
हल्ला भेलै गाम मे ।

धूम-धड़क्कामे के सोचत
की अनुचित की उचित भेलै
के जीलै के मारल गेलै
पावन कन्यादानमे ?

●

(पटना / 11.05.2011)

हमरा गाममे

पोखरि मा□छ मखान हमरा गाममे
अ□ना आ दलान हमरा गाममे ।

मूड़न आ उपनयन वियाहक भोज-भात अछि
जनउ - सुपारी - पान हमरा गाममे ।

फगुआ, दशमी, दीयाबाती आ छठि पावनि
पूरी आ पकवान हमरा गाममे ।

बट-सावित्री, मधुश्रावणी आओर कोजगरा
डाला आ चुमान हमरा गाममे ।

अल्हुआ, मडुआ, राहड़ि, कुरथी, मूंग, खेसारी
मकई, गहूम आ धान हमरा गाममे ।

तिरहुत, बटगवनी, डहकन, लगनी आ नचारी
सोहर आ समदाओन हमरा गाममे ।

चारि कोटि हमसभ छी मिथिलाकेर वासी
चारि कोटि भगवान हमरा गाममे ।

●

(पटना / 16.11.2011)

मिथिलामे

भूख, अशिक्षा आ अन्हार
अछि मिथिला मे
गर्म बहुत ब्याहक बजार
अछि मिथिलामे ।
गाम कते अछि बिला गेल
कोसीक धारमे
अनगिनती सूखल इनार
अछि मिथिलामे ।
जाति, मूल आ गोत्र आ शिक्षा
चालि-चलन
तिलक-दहेजहु के विचार
अछि मिथिलामे ।

पेटक खातिर लोक भगैए
दिल्ली मुंबई
सय बीमार आ एक अनार
अछि मिथिलामे ।
गामे-गामे पोल गड़ायल
कानि रहल अछि
बिनु बिजली गरमी-गुमार
अछि मिथिलामे ।
अल्हुआ, मड़□आ आ बिसा□ढ़
एखनहु खोबाले
सुतबा ले' एखनहु पुआर
अछि मिथिलामे ।
कहिया धरि अओता कोन □ष्ण
से के जानय
दुखकेर गोव□न-पहाड़
अछि मिथिलामे ।

●

(प्रकाशित : विदेह-ई/15.01.12)

नव सुरुज आ चान बनबिहें

नव सुरुज आ चान
बनबिहें रे बाबू
नव एक आसमान
बनबिहें रे बाबू ।
छला जते भगवान
से सभ पाथर बनला,
तों सभके □ इस्नान
बनबिहें रे बाबू ।
फेर बाढ़िमे मरय कियो नहि
से देखिहें
सभ ले' ई वरदान
लुटबिहें रे बाबू ।
गाम-गाममे, घर-घरमे
उत्सव हो,
भरल खेत-खरिहान
देखबिहें रे बाबू ।
कतहु स्वर्ग आ कतहु नर्क अछि
एना किए ?
एकहि हिन्दुस्तान
बनबिहें रे बाबू ।

●

(पटना / 18.04.2011)

दारू के दोकान गामे-गामे

पोखरिमे मखान गामे-गामे
दारू के दोकान गामे-गामे ।

दिन क' पूजा राति बिताबय चोरीमे
रावणके खरुहान गामे-गामे ।

कबुला केलक पूर मनोरथ भेलै लोकक
गेल छागरक जान गामे-गामे ।

ठाढ़े-ठाढ़े लोक मुतैए बाटे पर
टाका के मचान गामे-गामे ।

परिणयके □ उद्योग बनौलक मिथिलामे
अयाचीक सन्तान गामे-गामे ।

की हैत अइ बेर बाढ़िमे के जानय
छटपट कोटि परान गामे-गामे ।

बाट-घाटस□ का□ट-कूश कें दूर करू
अ□ाकेर अभियान गामे-गामे ।

●

(पटना / 01.06.2011)

हम चालनिमे पानि भरै छी

हम चालनिमे पानि भरै छी
कहिया स□ ।

जा□त पएरमे
बान्हि उड़ै छी
आंग्स□
आकाश नपै छी

अपनहि घरक बाट तकै छी
कहिया स□ ।

जंगल-जंगल
चहु□दिस जंगल
घेरि नेने अछि
हमरा जंगल

आ□न आ चिनुआर तकै छी
कहिया स□ ।

जागब, ऊठब
□यान करब
गंगामे
स्नान करब

शुभदिन केर विचार करै छी
कहिया स□ ।

●

(पटना / 29.06.1999)

घृणा करू ककरास□

घृणा करू ककरास□
अथवा प्रेम करू ?
हमरा चारूकात
गुलाबक अछि उपवन
उपवनमे अछि गाछ हजारो
और हजारो डारि-पात अछि
और डारिमे का□ट भरल अछि
मुदा ओहि का□टेक म□यमे
फूलक अछि संसार मनोहर,
किंक□र्व्यविमूढ़ हम
छी सोचि रहल की कोना कहू
घृणा करू ककरास□
अथवा प्रेम करू ?

ककरा लग बैसू
ककरास□ दूर रहू ?
हम त□ चारू कात देखै छी
पसरल अछि साम्राज्य समुद्रक
अछि समुद्रमे
मनमोहक संसार लहरि केर
एतय अहर्निश नृत्य चलैए
हिलकोरक संगीत चलैए
मुदा पियासल कंठ हमर
एहि जलके □ नहि स्वीकार करैए,

किंक□व्यविमूढ़ हम
छी सोचि रहल की, कोना कहू
ककरा लग बैसू
ककरास□ दूर रहू ?

ग्रहण करू की
अथवा कथीक त्याग करू ?

हमरा सेझ्रा□
माटिक एक संसार नचैए
हमरास□ संवाद करैए
'देह माटि थिक
प्राण माटि थिक
हारि–जीत
सम्मान माटि थिक'
हम माटिस□ खेल रहल छी
अपनहि हाथे □ बना घरौंद्रा
अपनहि हाथें मेटा रहल छी
नोर आ□खिमे रखने की–की
सोचि रहल छी कोना कहू
ग्रहण करू की
अथवा कथीक त्याग करू ?

●

(पटना / 20.03.2012)

हरियर धरती इनकिलाब

हरियर धरती इनकिलाब
जीवन यौवन जिन्दावाद !
गाछ–बिरिछ सभ कटइत गेल
पर्यावरण प्रदूषित भेल
शु□ जल आ शु□ हवा
अछि धरती पर दुर्लभ भेल
हाय ! प्रदूषण मुर्दावाद
जीवन यौवन जिन्दावाद !
हम धरतीकेर कर्ज चुकायब
रंग–विरंगक गाछ लगायब
डारि–पात आ छाहरि पायब
फूलो पायब, फलो पायब
वन आ उपवन इनकिलाब
जीवन यौवन जिन्दावाद !
पोखरि–धार–इनारक दुनिया
हरियर खेत–खम्हारक दुनिया
कल्पवृक्ष सन पावन देखब
गहुम–धान–कुसियारक दुनिया
जल संरक्षण इनकिलाब
जीवन यौवन जिन्दावाद !

●

(पटना / 06.06.2013)

जंगल-झाड़-पहाड़क जय हो

जंगल-झाड़ पहाड़क जय हो
पोखरि-धार-इनारक जय हो
जय हो झड़ना, नदी, समुद्रक
हरियर खेत-खम्हारक जय हो ।

शहरक जय हो गामक जय हो
जामुन, आम, लतामक जय हो
जय हो मकई, गहूम आ धानक
भूसा, नार, पुआरक जय हो ।

फूलक जय हो, फलक जय हो
यमुना, गंगा, जलक जय हो
जय हो मसुरी, राहरि, कुरथी
अल्हुआ आ कुसियारक जय हो ।

शक्तिक जय हो, भक्तिक जय हो
सकल प्रदूषण मुक्तिक जय हो
धर्मक जय हो, कर्मक जय हो
स्वच्छा धरा, सुविचारक जय हो ।

सृष्टिक जय हो, वृष्टिक जय हो
शुभ चिन्तन, शुभ दृष्टिक जय हो
शान्तिक जय हो, सुखकेर जय हो
भारत आ संसारक जय हो ।

●

(पटना / 09.06.2013)

चल रे मोन, विचार करै छी

चल रे मोन, विचार करै छी,
नव-नव आफतस□ लड़बा ले'
अपनाकें तैयार करै छी ।

बदलि रहल अछि दृश्य निरन्तर
कथा, पात्र आ चित्र निरन्तर
बेरा-बेरी हर्ष-विषादक
आमन्त्रण स्वीकार करै छी ।

पात्र हमर ई अनचिन्हार लगैए कखनो
अतिशय मादक ई संसार लगैए कखनो
शत्रु मित्रमे, मित्र शत्रुमे
सदिखन साक्षात्कार करै छी ।

हम साक्षी बनि देखि रहल छी अपनाके □
मूल्यवान हम बूझै छी सभ घटनाके □
सुखकेर दर्शन हो सभ दुखमे
बस तकरे उपचार करै छी ।

●

(पटना / 22.03.2013)

कहू भागि क□ जाएब कहा□

कहू भागि क' जाएब कहा□ ?

काँ□ट-कूश अछि सभ रस्ता पर
तरबा कोना बचाएब अहा□ ?

सभहक अपन-अपन दुनिया छै
सभठा□ सदिखन हलचल
बाहर-बाहर ठीक-ठाक सब
भीतरस□ सभ गड़बड़

सबहक अपन-अपन दुखरा छै
ककरा अपन सुनाएब अहा□ ?

सोना केर हरिण नै होइ छै
जुनि दौड़□ ककरो कहला पर
नै त□ पाछा□ बड़ पछतायब
जहिया आयब घर घुरला पर

छद्म-भेषमे सभठा□ रावण
संकटमे पड़ि जाएब अहा□ ।

दिल्लीस□ दरभंगा धरि अछि
'निर्भया'क चित्कार
□ष्ण आबि क' लाज बचेता
से सोचब बेकार

महिषासुरस□ एहि धरती के□
कहिया मुक्त कराएब अहा□ ?

माफ करत नै कहियो ककरो
सड़क, भवन आ पूल
खूजत कहियो अहू□क घरमे
सरकारी इसकूल

छोड़ि कलंक-कथा संतति ले'
दुनियास□ चलि जाएब अहा□ ।

दुनियाके□ सुन्दर बनबै ले'
नव-नव करू प्रयोग
अपन-अपन प्रतिभा, क्षमताकेर
करू उचित उपयोग

जीवन ज□ उत्सव बनि जाए त□
स्वर्ग अही ठा□ पाएब अहा□ ।



(पटना / 22.03.2013)

किदन-किदन सोचैत रहै छी

किदन-किदन सोचैत रहै छी ।

की भेलै आ की हेतै से
अपने स□ पूछैत रहै छी ।

सुखस□, दुखस□ भरल लगैए
पा□च युगक ई जिनगी
एखनहु□ मोन बेकल क' दैए
किछु धधरा किछु चिनगी
ई एना किए ? ओ ओना किए ?
हम अपनहिके □ टोकैत रहै छी ।

बाट कते अछि, बात कते अछि
जतय हमर हस्ताक्षर
किछु-किछु अनचिन्हार लगैए
अपनहि लीखल आखर
नोर आ□खिमे उमड़ि पड़य त□
अपनहिस□ पोछैत रहै छी ।

हम अपन इतिहास लिखै छी
मिलन आओर बिछुड़नके
हास आओर उपहास लिखै छी
जीवन आओर मरणके
हर्ष-विषादक विस्मय, पीड़ा
मोनहिमे भोगैत रहै छी ।

●

(पटना / 22.03.2013)

हम दुविधास□ मुक्ति मंगै छी

हम दुविधास□ मुक्ति मगै छी ।

मनमे सदिखन शुभ चिन्तन आ
शुभ दर्शन केर युक्ति मंगै छी ।

मृग मरीचिकामे ई जीवन
जहा□-तहा□ बौआए रहल अछि
सभटा अस्वीकार करय आ
अपने पर खौंझाए रहल अछि

सहज, सरल आ सुलभ हुए जे
हम ओकरहिस□ तृप्ति मगै छी ।

मूल्यवान ओ वस्तु लगैए
जे अपनास□ दूर रहैए
मुदा जखन ओ लग होइत अछि
मन ओकरास□ दूर भगैए
देखि सकी सुन्दरता लगक
हम आ□खिक ओ शक्ति मँगै छी ।
करुणाकेर गंगामे नित
असनान करी हम
अपनहि अन्तर्दृष्टिस□
अपनहि □यान करी हम
सुन्दर, शान्त, सतत अविनाशी
आत्माक हम भक्ति मंगै छी ।

●

(पटना / 22.03.2013)

की कहलनि दिनकर

की कहलनि दिनकर उगिते
की कहलनि दिनकर चलिते
की कहलनि दिनकर ह□सिते
की कहलनि दिनकर डुविते ?

कटि जाइछ रातिक सभ अन्हार
ढ़हि जाइछ दुखकेर सभ पहाड़

बाटक कुहेस केर होइछ अन्त
संकल्पक किरण पसरिते,
से कहलनि दिनकर उगिते ।

मानव पबइत अछि नव जीवन
जीवन बनि जाइछ उपवन-सन

माइक कोरा-सन हरियर
धरती केर आ□चर चुमिते,
से कहलनि दिनकर चलिते ।

अकर्मण्यता के □ तियागि
जहिए मनुक्ख अछि जाइत जागि

पबइत अछि धरती स□ सोना
अइ देहक घाम चुअबिते,
से कहलनि दिनकर ह□सिते ।

अछि आयु सत्य, अवसान सत्य
आगमन सत्य, प्रस्थान सत्य

बहिते रहइछ जिनगीक धार
नित बाट पुरान बदलिते,
से कहलनि दिनकर डुबिते ।

●

(रचना : 02.01.1975)

छोड़□ जारनि के बात

छोड़□ जारनिके बात, तरकारी के बात
छोड़□ गहना के बात, छोड़□ साड़ी के बात
चलू हम सभ आइ मंगल मनाबी
आइ नया सालक पहिल दिनमे ।
मोनेमे सभ दुख, मोने स□ दूर हएत
मीठ-मीठ बात करू, सभ आस पूर हएत

छोड़□ कोठी के बात आ बखारी के बात
छोड़□ पौतीके बात आ पेटारी के बात
चलू हम नव-नव सपना सजाबी
आइ नया सालक पहिल दिनमे ।
मोन कहय जिनगी तूर कि पहाड़ थिक
मोन कहय जिनगी इजोत कि अन्हार थिक

छोड़□ खापड़ि के बात, छोड़□ लाड़नि के बात
छोड़□ चालनि के बात, छोड़□ बाढ़नि के बात
चलू हम घरेके □ उपवन बनाबी
आइ नया सालक पहिल दिनमे ।
लोभी ले' पोखरिक मोहार थिक दुनिया
किरपिन ले' सूखल इनार थिक दुनिया

मोन मन्दिर बनय, मोन मस्जिद बनय
गुरुद्वारा बनय, गिरिजा-घर बनय
चलू हम मोनेमे उत्सव मनाबी,
आइ नया सालक पहिल दिनमे ।

●

सत्य अहिंसा केर जय हो

सत्य अहिंसा केर जय हो
न□व वर्ष मंगलमय हो ।

भ्रष्टाचारक तिमिर नष्ट हो
जन-मनमे सूर्योदय हो ।

का□ट-कूशस□ मुक्त बाट हो
सभ सज्जन-मन निर्भय हो ।

शिक्षा, शील, स्वभाव जाति हो
मूल-गोत्र नहि परिचय हो ।
हो दहेजस□ मुक्त धरा ई
समतरि पावन परिणय हो ।

जीवन हो संगीत प्रेम केर
सुगम ताल सुमधुर लय हो ।
अभिनयमे जीवन-दर्शन हो
जीवन सुन्दर अभिनय हो ।



(पटना / 18.12.2011)